शोध परिधि ISSN-2349-9575
साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

127

हिन्दी साहित्य में नारी चित्रण

डॉ० मिन्तु
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
कु0 मा0 रा0 म0 स्ना0 महा0, बादलपुर

शोध सारांश

इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर खड़ी आज की नारी दृढ़ता एवं आत्मविश्वास से भरपूर जीवन के संचालन में परिवार, समाज राष्ट्र एवं संस्कृति के सृजन में अपना निर्विवाद सहकार एवं महत्व प्रमाणित कर रही है। वह वैदिक काल की 'नारी नरक की द्वार है' जयशंकर प्रसाद की 'नारी तुम केवल श्रृद्धा हो' एवं तुलसीदास जी द्वारा निर्धारित एकमात्र धर्म पतिव्रत एवं पति के नाम से जाने-पहचाने जाने वाले सीमित दायरे को विस्तारित करने हेतु अनवरत् संघर्षशील है।

आधुनिक नारी समाज के प्रति सदैव 'सलज्ज और सजग रहने वाली नैतिकता के बन्धन से अपने को मुक्त कर चुकी है। आज वह अपने व्यक्तित्व विकास की चरम सीमा से रूबरू हो रही है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, हर आयाम में धरा से लेकर अंतरिक्ष तक नारी सक्रिय है। ऐसी स्थिति में उसके स्वरूप को अलग से पहचाने जाने का समय आ गया है।

नारी विश्वरूप परमात्मा की कलाकृति है। सृष्टि की इस उत्कृष्ट रचना 'नारी' का इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व प्रारम्भ से ही साहित्य की विविध विधाओं का आकर्षण केन्द्र रहा है। आदिकाल से आज तक की वर्तमान नारी का स्वरूप उत्थान पतन के एक लम्बे संघर्षमय सफर की गाथा है। ऐसी स्थिति में उसके स्वरूप को अलग से पहचाने जाने का समय आ गया है। विभिन्न साहित्यकारों ने इसका गहरा अनुभव किया तथा कथा एवं नाटक साहित्य सभी में अधुनातन नारी के स्वरूप, मूल्य तथा जीवन दर्शन को अभिव्यक्ति प्रदान की है। नारी मानव सृष्टि की अनुपम देन है। यह सृष्टि का साधन और प्रकृति का मूर्त रूप होकर पुरुष के लिए सौन्दर्य, प्रेम, अनन्यता और आनन्द का कारण बनती है। अपने विविध रूपों में नारी ने पुरुष को संवर्द्धन, प्रोत्साहन और शक्ति दी है। वह समाज में पुरुष के लिए कभी जननी तो कभी सहचरी, सहयोगिनी अथवा अर्धांगिनी के रूप में तो कभी स्नेह की भावधारा को प्रवाहित करने